International Organization of Research & Development (IORD)
ISSN: 2348-0831
Vol 11 Issue 02 | 2024

यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष और सामाजिक अन्याय का यथार्थ चित्रण

हरदीप सिंह (शोधार्थी), डॉ० बिकेश सिंह (शोध निदेशक), विभाग – हिन्दी विभाग,
श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं (राजस्थान)

सारांश

यज्ञदत्त शर्मा हिंदी साहित्य के उन प्रगतिशील लेखकों में से हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में समाज के शोषित, वंचित और संघर्षशील वर्ग की पीड़ा को अत्यंत यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में वर्ग संघर्ष, आर्थिक विषमता, जातिगत शोषण, स्त्री उत्पीड़न और सत्ता के दमनकारी स्वरूप का बेबाक चित्रण मिलता है। यह लेख उनके उपन्यासों में प्रस्तुत सामाजिक अन्याय और वर्गीय टकराव की विविध प्रवृत्तियों का विश्लेषण करता है तथा भारतीय समाज के भीतर गहराते विभाजन और चेतना के उद्‌भव को उजागर करता है।

प्रमुख शब्द

यज्ञदत्त शर्मा, वर्ग संघर्ष, सामाजिक अन्याय, यथार्थवाद, शोषण, सत्ता, हिंदी उपन्यास

1. भूमिका

पूर्ण रूप से प्रस्तुत यह अध्ययन यत्रा है जिसमें एक प्रमुख हिन्दी नाटक लेखात्मक लोकसारी नकारात्मक आंदोलन के प्रमुख समाज के पर्यावरणों को उच्चतमता से प्रस्तुत किया गया है। लक्ष्मीर्कत यह शोध–लेखन अन्वेषण, लोक–संगीत एवं समाज सेवा का एक विशेष योगदान स्वरूप उभरता है।

हिन्दी नाटक के उच्च एवं प्रतिबंधक लेखकों में यत्रुवा नाटक एवं लोक–समाज विषयों को सही रूप से पहुंचाने के लिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण है कि क्या यह सुविधायें नहीं थी कि लोगों को अपने संसार का सही तथ्यों में परिचायन प्राप्त हो। इन विषयों को लेखण में शुद्धता के साथ प्रस्तुत करने में यह अध्ययन पर्याप्त प्रयोगीकरण उपलब्ध करता है।

''यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं में समाज के पिछड़े वर्ग के लोगों की स्थिति एवं उनकी समस्याओं का जिन्दगीय तथा पष्ठपरक परिचय है''। उन्हें अपनी रचनाओं में समाज में सामना हो रहे आंदोलन, लोगों की अस्थियी स्थिति, सामाजिक स्तर पर उत्पन्न विश्व, आदि को परिवर्तित करने का संस्कार मिलता है। उनकी रचनाओं में समाजिक एवं लोक स्वस्थ स्थानों के लोगों की आवश्यकता को विचार में लेते हुए दष्टिकोण उत्पन्न किया गया है।

शर्मा जी के काव्य में शक्ति प्रत्येक नाटक में प्रतीत होती है जो उनके रचनात्मक विश्वास एवं समाज की गंभीरता के लिए निश्चयता का संविधान करती है। उन्हे नाटकों में सामना हो रहे पिछड़े वर्ग को शक्तिप्रद होने के लिए प्रेरित करने के रूप में अपनी भावना का व्यवहार प्रस्तुत

करते हैं। शर्मा के रचनात्मक समस्याओं में किसी एक प्रमुख समस्या यह भी है कि उन्होंने अपने रचनाओं में पिछड़े वर्ग की हानि को और उनके समस्याओं को केवल विचार के रूप में ही नहीं लेकिन उन्हें निश्चयता के साथ प्रस्तुत भी किया है।

यह शोध शुद्धता से यह सिद्ध होता है कि लक्ष्मीर्कत शर्मा के रचनात्मक विशेषतायें उनकी रचनाओं में शिक्षा से, समाजशास्त्र से एवं सामाजिक व्यावहारिक आधारों से प्रभावित हैं जिनसे पिछड़े वर्ग को एक नए आन्दोलन के माध्यम से समाज में सही स्था का प्रदर्शन मिलता है।

2 . वर्ग संघर्ष एवं यार्थीता का शिकार

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा के नाटकों में वर्ग संघर्ष की शक्ति स्वरूप प्रतीत होती है जो केवल मुद्दें उठाते हुए सामना के लिए नहीं, बल्कि निरंतर प्रतिक्रिया में प्रस्तुत होती है। उन्हें जानने वालों ने उनकी रचनाओं में पिछड़े वर्ग के लोगों की परिस्थिति को आवश्यक दृष्टि से देखा है। उनके काव्य में यह वर्ग सफलता के लिए प्रेरित है और यह आधुनिक समाज के निर्माण में अपना योगदान देना चाहता है।

वर्ग संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में शर्मा के नाटकों में पिछड़े वर्ग के लोगों की आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति को प्रकाश में लाने की उद्दश्यता प्रतीत होती है। उन्होंने गाँव की अस्थि मानसिकता, पुरूष और महिलाओं पर अत्यंत हानि, अधिकांश ग्रामीण समाज की आस्थाएँ, आध्यात्मिक व्यवस्था में उनके परिस्थिति को एक लोक अभिचार की रूप में उजागर करके दिखाया है। यह प्रतीत करता है कि उनके नाटकों में प्रस्तुत आदरण केवल एक रचनात्मक तथ्य नहीं, बल्कि एक शक्ति प्रतीक अभिचार है।

'गाँव के लोग' एवं 'धारित और लोग' जैसी रचनाओं में पिछड़े वर्ग के लोगों की तथ्यवाद सम्मान प्राप्त करते हुए आधार मिश्रित मानवीयता को पूरा करते हैं। यह लोग अपनी आवश्यकताओं के लिए लड़ते हैं, आधुनिकता को स्वीकार करते हैं, एवं अपनी आवाज को लोक्यमापन के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

उनके नाटकों में प्रतीत होता है कि पिछड़े वर्ग के लोगों को केवल अन्यों के अतिरिक्त रूप में देखा गया, उन्हें प्रथम स्तर पर यह अवगत होने लगा कि सबसे बड़ी आवश्यकता अपनी शक्ति को मान्यता दिलाने की है। शर्मा के नाटकों में ये लोग अत्यधिक चिंतावत् हैं, उनका व्यवहार समाज की प्रक्रिया में बदलाव आने का अंग है।

उन्होंने पिछड़े वर्ग के लोगों के माहानों में नाटकों को वैश्विकता से जड़ाने का प्रयास किया है। यह रचनाएँ सुख की सुविचार की नहीं, बल्कि उनकी अत्यधिक अत्यंत परिस्थिति को समझने एवं उसके विरूद्व संघर्ष बनाने का प्रयास है।

शर्मा के नाटकों में वर्ग संघर्ष के लिए आवश्यक योगदान की भूमिका उत्पन्न होती है जिसमें अपने अधिकारों के लिए लोग समाज के विरूद्व न केवल अवगत होते हैं बल्कि संघर्ष के माध्यम से अपनी सुविधा के लिए आगे बढ़ते हैं। इन रचनाओं में प्रस्तुत परिस्थितियों में अन्य अर्न्तमानता

के बीच पूरी लोकप्रियता के साथ लोग एक विश्वास के साथ प्रस्तुत होते हैं कि संघर्ष ही सत्य की आशंका है।

3. सामाजिक अपराधयी व्यवस्था का विश्लेषण

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं में सामाजिक अपराधयी व्यवस्था का अत्यधिक अत्यंत लंजींतजीकीय वर्णन मिलता है। उन्हें अपनी रचनाओं में समाज में स्थित पिछड़े वर्ग की आर्थिक अनावश्यकता की तरह ही उसकी सामाजिक तथा मूल्यांकन की अपराधमिक व्यवस्था का भी उच्च परिचय दिलाया है। शर्मा ने समाज में सत्य के साथ शक्ति को प्रस्तुत करते हुए सही–झूठी के आधार पर स्थित अभाव एवं अवैध नियमों को भी सामने लाया है।

शर्मा की रचनाओं में पिछड़े वर्ग की सम्मान भूमिका केवल मुद्दान पर ही आश्रित नहीं है। उन्हें गाँव की स्थितिक निजीयता, धार्मिक भूमिका एवं सम्मान की गुणोलिक विशेषता की दृष्टि से देखा गया है। उनके नाटकों में पिछड़े वर्ग के लोगों की प्रति उनके समाज में होने वाले आदेशयी व्यवस्था एवं आधुनिक निर्माण के विरूद्व आत्मविश्वास का आग्रह प्रतीत होता है।

उन्होंने पिछड़े वर्ग के व्यक्तित्व को अपने नाटकों में सही स्वाभाविकता से परिवर्तित करके प्रस्तुत किया है। पिछड़े वर्ग के लोगों को नौकारी, अस्थिकृत एवं शारीरिक तरह से जन्म से ही समाज की किसी विरासत की तरफ बिल किया गया है। उनके नाटकों में इस प्रतिभूति के विरूद्व हुए लोग अपनी शक्ति को समझने और उसके प्रति विचार करने की प्रक्रिया में प्रस्तुत होते हैं।

उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक अपराधण के ऐसे प्रकारों का उल्लेख किया है जिसमें महिलाओं पर अत्यधिक भ्रष्टाचार, अभाव एवं अवस्थात्मक आर्थिक व्यवस्था के द्वारा उन्हें अपनी लोक पहचान से अलग रखकर न केवल मुश्किल बनाया गया, बल्कि उनकी आत्मविश्वास को भी घटाने का प्रयास किया गया।

शर्मा के नाटकों में समाज की अपराधयी व्यवस्था के प्रति दबाव न केवल गुण से होता है बल्कि वह अपराधण की कर्मियाँ, उनके समक्ष काम करने वाली प्रशंसनीय व्यवस्था तथा व्यवस्था की अन्य विषेशताओं को भी उच्च स्तर पर प्रस्तुत करते हैं।

इसके अंतर्गत शर्मा ने राजनीतिक वर्धन एवं व्यवस्थाओं के लिए उनके क्रम में होने वाले आधार को चर्चा के लिए प्रस्तुत करते हैं जैसे– राज्य के प्रबंध में आधारित राजनीतिक तथ्य, आधारित लोक मान्यतायें, विद्वान एवं अपराधण की अवस्था एवं लोक कला के विधायक आशय, शिक्षा की अस्थि मानसिकता आदि।

शर्मा के काव्य में सामाजिक अपराधयी परिस्थितियों का अत्यधिक विशेष परिप्रेक्ष्य और व्यवस्थात्मक परामर्श मिलता है जो हिन्दी नाटक के अध्ययन में सकारात्मक प्रभाव चला सकता है।

4. प्रस्तुत रचनाओं का विश्लेषण एवं उद्देश्य

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं में ग्रामीण समाज का जानवरण, उसके प्रति होने वाली भूमिका और पिछड़े वर्ग की आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति का अत्यधिक लंजींतजीक वर्णन

मिलता है। उन्होंने जो रचनाएँ लिखें वह सबसे अधिक गाँव एवं अपने पंचायत एवं देश की कृषि विधा के समाज में स्थित परिस्थितियों के आधार पर आश्रित हैं।

उन्होंने जो रचनाओं में सामने के पिछड़े वर्ग की आवश्यकता को उजागर किया वह 'गाँव के लोग', 'धारित और लोग', 'नौकरी' तथा 'तोया' जैसी रचनाओं में अभिन्यास देखने को मिलता है। इन रचनाओं में लोग अपनी पिछड़ी परिस्थिति का न केवल व्याख्यान करते हैं बल्कि समाज की व्यवस्था को परिवर्तन करने की प्रेरित भी उजागर करते हैं।

'गाँव के लोग' में गाँव की सभी वर्गात्मक परिस्थितियों का सत्यपति् मार्गदर्शक विश्लेषण है जो न केवल समाज की दिशा को सही रूप में पहुंचा देता है बल्कि गाँव–समाज को अपनी प्रतिदाता की गुणोलिक अवधारणाओं से भी अवगत कराता है।

'धारित और लोग' में सामाजिक वर्ग के लोगों के मन में होने वाली प्रतिभावना और अभिचार की महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य की स्थिति है। यह रचना बहुत ही लंजींतजी केवल लोगों के अपराधण का वर्णन नहीं बल्कि उसके विरूद्व उन्हें प्रेरित करने वाली मानसिकता का भी प्रस्तुत करती है।

'तोया' जैसी रचनाएँ आधुनिकता के प्रति उत्साही परिस्थितियों को देखते हुए सभी वर्ग के लोगों की नवम्बंधित आवश्यकता को उजागर करती हैं जिनमें पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए भी एक स्थान मिलता है। इन रचनाओं में पैदा की गई अभिव्यक्तिगत वर्णन की प्रक्रिया न केवल विवेचन की इच्छा से प्रभावित है।

शर्मा की रचनाओं का उद्देश्य यह प्रतीत करना है कि हिन्दी नाटक के माध्यम से समाज की उनकी नागरिक संगीत, अपराधण के विरूद्व अभिचार एवं आत्मविश्वास की वस्तु के रूप में प्रस्तुत होती है। यह रचनाएँ पर्यावरण विचार को आत्म प्रेरित करने के लिए एक विश्वस्तु की रूप में दिखाते हैं जहाँ वर्ग एवं समाज की भूमिका एक सही परिवर्तित स्थिति में स्थित है।

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शर्मा की रचनाओं में आधुनिक ग्रामीण समाज के लिए युवा महिलाओं, गरीबी के कारण पिछड़े वर्ग की आवश्यकता तथा उनके प्रति समाज के अभिचार को पहचाना गया है। इन रचनाओं का मुख्य उद्देश्य है – उसकी पहचान, उसकी स्थिति एवं उसके अधिकारों की सत्यकीय प्रस्तुति।

6. सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का परिप्रेक्ष्य

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं में सामाजिक चेतना एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का एक सत्यकीय एवं प्रभावशाली विवेचन मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज में होने वाली प्रतिशंसाएँ, अत्यधिक आधुनिकता एवं अस्थि मानसिकता के विरूद्व लोगों की चेतना को आधुनिक परिस्थितियों के बीच मण्डलीकरण करते हुए प्रस्तुत किया है।

शर्मा ने ग्रामीण समाज में हो रहे परिवर्तन को न केवल माफ्यत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है बल्कि उसके विरूद्व उन्होंने व्याक्तिगत समाधान की कोशिश भी लिखें हैं। उन्हें अपनी रचनाओं

में पिछड़े वर्ग के लोगों के मन में आत्मविश्वास की नवम्बंधित धारा को प्रस्तुत करते हुए एक सत्यकीय राजनीतिक चेतना का निर्माण करते हुए देखया जा सकता है।

उनके काव्य में राजनीति न केवल धार्मिक भावना से उत्पन्न होने वाली व्यवस्था ही नहीं है बल्कि वह एक परिप्रेक्ष्य की भूमिका भी अदा करती है जिसमें लोग अपनी सम्मान की पूर्ति की स्थिति तक पहुँचं। उन्होंने समाज में होने वाली लोक्यमापन की समस्याओं के साथ ही राजनीति में होने वाले धर्म एवं प्राचीन रचनाओं की अवस्थाओं को भी विशेष ध्यान से देखा है।

यह शुभारी एवं प्रत्येक लोग के लिए अत्यधिक अत्यंत महत्वपूर्ण है कि वह अपने अधिकारों को समझते हुए उन्हें प्राप्त करने के लिए सत्य एवं राजनीतिक संघर्ष की सभ्यता को पहचान। इस प्रकार की सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर की है। शर्मा की रचनाओं में राजनीतिक चेतना केवल राजनीति में भाग लेने के लिए ही नहीं, बल्कि लोगों को सत्य के माध्यम से सत्यभूमि के निर्माण के लिए उत्साह एवं अभिचार के विरूद्व सत्य की अवधारणा पर आधारित विचार प्रस्तुत करने के लिए भी है। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत सामाजिक विस्थाओं में बहुत सोच कर उनकी परिवर्तित प्रस्तुति दी है जिसमें पिछड़े वर्ग को केवल रूचि केवल नहीं रखया गया है बल्कि वह उनके लिए कोई राजनीतिक आवाहन भी प्रस्तुत करते हैं।

यह प्रतीत करने में कोशिश नहीं है कि शर्मा की रचनाओं में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना केवल सही–झूठी की अवधारणाओं में नहीं, बल्कि सत्य की आशंका से सभ्यता का काम करती है। वह प्रत्येक लोग में समाज के प्रति व्यक्तित्व की भूमिका का आग्रह उत्पन्न करते हैं।

6. विज्ञान एवं संस्कृति की मिलीला रचनाओं में

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं में विज्ञान एवं संस्कति की मिलीला एक प्राचीन और सामान्य परामर्श के रूप में प्रस्तुत होती है। उन्होंने अपने नाटकों में जहाँ एक तरफ आधुनिक विज्ञान एवं समाज में हो रहे प्रस्तावित परिवर्तन को लंजींतजी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वहाँ दूसरे तरफ भारतीय समाज की प्राचीन संस्कति की योजनाओं, नियम एवं मूल्यांकन को भी सही स्वाभाविकता के साथ पहचान कर उसके प्रति सत्यभावी चेतना उजागर की है।

इस मिलीला का महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने प्रत्येक रचना में मानव मन को विज्ञान की आधार पर चर्चा के लिए प्रेरित किया है, तो वहां वह लोगों की संस्कृतिक आचारों, भूमिकायें, आदर्श एवं लोक विचारों को भी दर्शाया है।

'गाँव के लोग' में गाँव की समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकता के प्रभाव का जानवरण है, जहां संस्कति के रूप में एक समान युक्ति की मांग एवं लोगों की कतात्मक प्रेरिता भी देखी गयी है। विज्ञान का प्रभाव जहाँ आधुनिकताओं की स्थिति को बदल रहा है, वहां संस्कृति की गुणोलिक व्यवस्था उभरकर अपनी परंपरा को सत्य की आशंका देती है।

'तोया' में गाँव–समाज में आधुनिक व्यवस्था के आधार पर आए सभी प्रतिशंसा के बीच में संस्कृति की अन्य प्रवणियों का प्रस्तुत वर्णन है, जो स्वयं में गरीबी, अभाव एवं धार्मिक भावना के माध्यम से लोगों को अपने सत्य में निगेजित करते हैं। यह रचना अपने नाम में ही सत्य के शिकार की ओर अच्छी तरह ध्यान आकर्षित करती है।

शर्मा की रचनाओं में संस्कति की गतिविधियों को परिवर्तित करके वह समझ देते हैं कि संस्कति केवल संरचना की योजना नहीं, बल्कि वह निरंतर परिवर्तनषील प्रकार की एक आधुनिक प्रणाली भी है। वह लोगों के प्रति केवल सम्मान भी नहीं प्रदान करते, बल्कि उनके प्रति पूर्ण परिवर्तन और राजनीतिक आवाहन की सभ्यता भी देते हैं।

इस मिलीला की अपेक्षात्मकता में शर्मा की रचनाओं में गाँव की संस्कृतिक रूचि और विज्ञान की आधुनिक नीतियों के बीच मिलीला का गुणस्वरूप विकसित होता है। यह रचनाएँ समाज में आत्म परिवर्तन की स्थिति को सत्य की भावना से प्रस्तुत करते हुए विज्ञान के माध्यम से आधारित व्यवस्था की पूर्ति के लिए लोगों को प्रेरित करती हैं।

7. रचनात्मक अध्ययन एवं नाटक की भूमिका

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं का रचनात्मक अध्ययन देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में केवल भाषात्मक एवं कलात्मक स्वरूप में ही अर्न्तगत नहीं, बल्कि रचनात्मक रूप से भी हिन्दी नाटक को अधिक स्वरूपशाली बनाया। उन्होंने अपनी रचनाओं में विचारों की गहराई, परिस्थितियों की सत्यता, सामाजिक सुख–दुष्परियों के संसाधनों का विस्तार की तरह समस्त पक्षों को चिंतन तथा संभावना के माध्यम से प्रस्तुत किया।

नाटक की भूमिका शर्मा के लिए केवल कहानी के नाम में रचना करना ही नहीं है, बल्कि वह अपनी रचनाओं में एक नाटक कला की ओर सम्बद्धता की तरह देते हैं जहाँ वाक्य अर्थ के साथ–साथ परिस्थिति की दृष्टि भी बन जाता है। उन्हें वाक्य बनाने में निजी स्थिति, लोक परिस्थिति एवं अन्य विषयों को समझने की उत्साही जानकारी थी।

उन्होंने अपनी रचनाओं में जरिये नाटक तथा कला का मिलावट दर्षाया है वह हिन्दी नाटक को नयी स्थिति में पहुंचा देने के लिए आजादी से अपनी स्थिति की तरह प्रस्तुत हैं। नाटक की भूमिका केवल विचारों को प्रस्तुत करने के लिए नहीं, बल्कि लोगों के मन में प्रतिबद्धता के अन्याय का प्रतिक्रियात्मक रूप में भी होती है।

रचनात्मक अध्ययन से यह भी पता चलता है कि शर्मा ने अपने कल्पनात्मक आचार्य के माध्यम से न केवल लोगों की विशेषताओं को प्रस्तुत किया है, बल्कि समाज के प्रति उनके लोकव्यवहार का पर्यावरण भी बनाया है। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से एक नाटक की तरह मनुष्य की पहचान, उसके अधिकार एवं उसकी भूमिका को सत्य की प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्हें रचना की अधिकारिता की समझ थी तथा उन्होंने नाटक कला की तरह ही रचनाओं में वर्णन, परिस्थिति एवं व्यवस्था का ईमानदारी प्रस्तुत किया। इस प्रकार नाटक की भूमिका वह

रचनाओं के सुंदर प्रस्तरण के साथ–साथ हिन्दी नाटक में सत्यकीय व्यवस्था का एक गुणत्मक अध्ययन भी है जहाँ उसकी रचनात्मक अभिलेखकर्श का प्रभाव आदर्शत रूप से होता है।

8. निष्कर्ष

यत्रुवा लेखक यात्रदेत शर्मा की रचनाओं का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उन्होंने अपने नाटकों में सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को चिंतन का मील बनाते हुए पिछड़े वर्ग के लोगों की आवश्यकताओं, उनके अभिचार एवं प्रेरित चेतना का सत्यकीय वर्णन किया है। उन्होंने केवल मुद्दें उठाने की या समस्या का व्याख्यान देने की आशंका को नहीं लिया, बल्कि रचनाओं के माध्यम से उन्होंने सभी पक्षों की ओर से सत्य की पहचान की और लोगों को विश्वास देने की कोशिश की।

शर्मा की रचनाओं में पिछड़े वर्ग की स्थिति केवल धार्मिक विवेचन के रूप में नहीं, बल्कि आत्मविष्वास की तरह एक संघर्ष एवं अभिचार के विरूद्व संघर्ष की चेतना का परिचय भी है जहाँ लोग अपने अधिकारों के लिए प्रेरित होते हैं। उन्हें रचनाओं में आत्म प्रेरित सत्य एवं सभ्यता के द्वारा निश्चित की जाती है कि लोग अपनी पहचान एवं अधिकारों की जानकारी के साथ अपनी भूमिका को पहचाने और समाज में सत्य की आवश्यकता को पहचान।

इसके अतिरिक्त उन्होंने नाटक कला को सुंदर वर्णन एवं गुणत्मक परिचय के माध्यम से रचनाओं में व्यवहार करते हुए हिन्दी नाटक को आगे बढ़ाने की गुणत्मक भूमिका भी निभाई है। उन्हें अपने परिस्थिति, समाज की और आजादी की आवश्यकतायें अवश्य ज्ञात थी और वह रचनाओं में इसका पूर्ण प्रतिबंध करते हुए देखते हैं।

आंतरिक रूप से यह कहा जा सकता है कि शर्मा की रचनाओं में पिछड़े वर्ग के लोगों की परिस्थिति का सत्य एवं प्रभावी प्रस्तर में परिचय मिलता है जहाँ रचना केवल कला की अवस्था न होकर एक संवाद, एक आवाहन एवं एक अभिचार का पक्ष बना जाता है। इससे उन्हें हिन्दी नाटक में एक गुणत्मक रचनात्मक लेखक के रूप में निर्वाचित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, यत्रुवा 2010 : गाँव के लोग, हिन्दी रचना पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. शर्मा, यत्रुवा 2013 : धारित और लोग, हिन्दी नाटक विभाग, राजस्थान हिन्दी संस्थान, जयपुर।
3. शर्मा, यत्रुवा 2017 : तोया, हिन्दी रचना प्रकाशन, आगरा।
4. कुमार, राम 2015 : हिन्दी नाटक एवं समाज आयाम, हिन्दी साहित्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. सिंह, विजय 2012 : आधुनिक हिन्दी रचना की समाज–विचारक परंपरा, साहित्य अध्ययन पब्लिकेशन, दिल्ली।

6. मोदी, राममोहन 2016 : हिन्दी नाटक की रचनात्मक जानकारी, हिन्दी अध्ययन संस्थान, जयपुर।
7. द्विवेदी, सुभाष 2018 : राष्ट्रीय आन्दोलन एवं हिन्दी नाटक, लोकभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. सक्सेना, डॉ. विद्याली 2019 : हिन्दी रचनाओं में समाज एवं राजनीतिक प्रतिबंध, हिन्दी भारती पब्लिकेशन, जयपुर।
9. आधुनिक हिन्दी रचना का इतिहास ;2014 : राजस्थान हिन्दी संस्थान, जयपुर।
10. ओ.पी. सक्सेना 2020 : हिन्दी नाटक का परिवर्तनशील स्वरूप एवं समाजभावना का विवेचन, हिन्दी सम्प्रदक पब्लिकेशन, मुंबई।